साधु और शास्त्र एक मार्ग का निर्देश करते हैं। इन तीनों में अन्तर्विरोध नहीं है। इनके निर्देश में सम्पादित सारे कर्म संसार के शुभ-अशुभ कर्मफल से मुक्त रहते हैं। भक्तजन संन्यास के दिव्य भाव से कर्म करते हैं। जो भगवत्-आज्ञा का अनुगमन करते हुए कर्म करता है, वह वास्तव में संन्यासी ही है; केवल संन्यासी का वेष धारण करनेवाला अथवा कपट-योगी संन्यासी नहीं है।

बुद्धिर्ज्ञानमसंमोहः क्षमा सत्यं दमः शमः।
सुखं दुःखं भवोऽभावो भयं चाभयमेव च।।४।।
अहिंसा समता तुष्टिस्तपो दानं यशोऽयशः।
भवन्ति भावा भूतानां मत्त एव पृथग्विधाः।।५।।

बुद्धिः=बुद्धि; **ज्ञानम्**=ज्ञान; **असंमोहः**=संशय से मुक्ति; **क्षमा**=क्षमा; **सत्यम्**=सत्य; **दमः**=इन्द्रियों का संयम; **शमः**=मन का संयम; **सुखम्**=सुख; **दुःखम्**=दुःख; **भवः**=जन्म; **अभावः**=मृत्यु; **भयम्**=भय; **च**=तथा; **अभयम्**=निर्भयता; **एव**=निःसन्देह; **च**=तथा; **अहिंसा**=अहिंसा; **समता**=समभाव; **तुष्टिः**=सन्तोष; **तपः**=तपस्या; **दानम्**=दान; **यशः**=यश; **अयशः**=अपयश; **भवन्ति**=होते हैं; **भावाः**=भाव; **भूतानाम्**=जीवों के; **मत्तः**=मुझ से; **एव**=ही; **पृथग्विधाः**=नाना प्रकार के।

अनुवाद

बुद्धि, ज्ञान, संशय और मोह का अभाव, क्षमाभाव, सत्य, इन्द्रिय-निग्रह, मन की सौम्यता, सुख, दुःख, जन्म, मृत्यु, भय, अभय, अहिंसा, समता, सन्तोष, तप, दान, यश और अपयश आदि जीवों के सब नाना प्रकार के भाव मुझ से ही होते हैं।।४-५।।

तात्पर्य

यहाँ वर्णित जीव के सब अच्छे-बुरे गुणों की रचना श्रीकृष्ण ने की है।

बुद्धिः का अर्थ सूक्ष्मार्थ विवेचन की सामर्थ्य है और **ज्ञान** का अर्थ है चित् और अचित् वस्तु का तत्त्वबोध। विश्वविद्यालय की शिक्षा से प्राप्त होने वाला सामान्य ज्ञान केवल जड़ अनात्मा से सम्बन्ध रखता है। अतएव उसे यहाँ **ज्ञान** नहीं कहा गया है, क्योंकि आत्मा और अनात्मा में भेद का बोध ही यथार्थ ज्ञान है। आधुनिक शिक्षा में आत्मा का ज्ञान नहीं है। केवल भौतिक तत्त्वों और शारीरिक आवश्यकताओं की परिचर्या में संलग्न होने के कारण विश्वविद्यालय की शिक्षा एकांगी और अपूर्ण है।

असंमोहः अर्थात् संशय एवं भ्रम का अभाव। इसकी प्राप्ति संकोच त्याग कर भागवतधर्म को समझने से होती है। इस पद्धति से मनुष्य शनैः-शनैः निश्चित रूप से मायामुक्त हो जाता है। किसी भी विषय में अन्धविश्वास करना ठीक नहीं। गम्भीर विचार करने के बाद ही किसी मान्यता को स्वीकार करना उचित है। **क्षमा**